INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

Volume 3, Issue 4, April 2015 ISSN: 2320-2882 (Online)

ORIGINAL ARTICLE

Impact Factor: 0.345(GIF)

www.ijcrt.net

भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण

डा0 गोविन्द प्रसाद मिश्र

असि0 प्रोफेसर–दर्शन शास्त्र विभाग

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार

मेल–drgovindmishra@gmail.com

शोध आलेख सार

भारतीय दर्शन मे प्रमाण का अर्थ है यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन। यद्यपि सभी भारतीय दर्शन प्रमाण के महत्व को स्वीकार करते है किन्तु प्रमाणो की संख्या को लेकर मतभेद है। इसलिए भारतीय दर्शन में एक से लेकर आठ और कहीं–कहीं दस प्रमाण (ज्ञान प्राप्ति के साधन) स्वीकार किये गये हैं जो कहलाते हैं– प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, सम्भव एवं एतिह्य। तन्त्र दर्शन में चेष्टा को भी प्रमाण माना गया हैं। इन सभी प्रमाणो में प्रत्यक्ष ही एक मात्र ऐसा प्रमाण हैं जिसे सभी दर्शन निर्विवाद रुप से ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ साधन स्वीकार करते है। प्रमाणों के सन्दर्भ में न्याय कुसुमांजलि में कहा गया है कि–

चार्वाको हि समक्षमेकमनुभायुग बौद्ध वैशिषिको,
संख्यः शाब्दयुतंद्वयं तदुमायुक् चाक्षपादस्वयम्।
सार्थापत्ति चतुष्टयं षडिति तदमानं प्रभाकृत पुनः,
भाट्ट सर्वमभावयुक् जिनमतेऽध्यक्षं परोक्षं द्वयम्।।

शोध आलेख

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। जानने की इच्छा उसका स्वभाव है। जानने का अर्थ है बोध होना यानि ज्ञान हो जाना क्योंकि भारतीय दर्शन मे प्रायः बोध और ज्ञान को समानार्थी शब्द के रुप मे प्रयोग किया गया हैं। ज्ञाता की चेतना मे कोई भी विषय जिस रुप में उपस्थित होता है उसे ही बोध या ज्ञान कहते हैं। अतः ज्ञान वह है जो विषय को प्रकाशित करता है। ज्ञान का प्रक्रिया में तीन तत्त्व सम्मिलित होते है–

(1) ज्ञाता (यानी ज्ञान प्राप्त करने वाला)
(2) ज्ञेय (यानी का विषय)
(3) ज्ञान का साधन (यानी प्रमाण)

उदाहरण के लिए लाल वस्तु का बोध होने के लिए आवश्यक है–

(1) लाल रंग की वस्तु (ज्ञेय)
(2) लाल वस्तु को जानने वाला (ज्ञाता)
(3) ज्ञान प्राप्ति का साधन (प्रमाण जैसे इन्द्रिय अनुभव)

हमें होने वाला बोध हमेशा सही ही नही होता, गलत अनुभव या भ्रम भी हमें हो जाता है। इसलिए ज्ञान के दो भेद किये गये हैं–

(1) यथार्थ ज्ञान (प्रमा)
(2) अयथार्थ ज्ञान (अप्रमा)

ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का साधन (प्रमाण) का समानार्थी शब्द प्रमा के दृष्टिकोण से प्रमाता (ज्ञाता) , प्रमेय (ज्ञेय) और प्रमाण कहलाते हैं। भारतीय दर्शन मे प्रमाण का अर्थ है यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन। यथार्थ ज्ञान अथवा प्रमा की प्राप्ति जिससे हो उसे प्रमाण कहते हैं– **प्रमीयतेऽनेन इति प्रमाणम।** शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'प्रमाण' शब्द करण (साधन) अर्थ वाले 'ल्यूट' प्रत्यय से बना है। साध्य की प्राप्ति हेतु साधन की आवश्यकता पड़ती है। यथार्थ ज्ञान (प्रमा) साध्य है तो प्रमाण साधन। ज्ञान की प्राप्ति हेतु प्रमाता और प्रमेय के संयोग के साथ उसका साधन (प्रमाण) भी आवश्यक होता है।

तर्क संग्रह के अनुसार प्रमा के करण (साधन) को प्रमाण कहते है– **प्रमाकरण प्रमाणम–** प्रमाण के अभाव मे प्रमाता को प्रमेय का ज्ञान नही हो सकता। इसीलिए प्रमाता ओर प्रमेय की अपेक्षा प्रमाण अधिक महत्वपूर्ण है। न्यायवार्तिक मे भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।[2]

भारतीय दर्शनों में **चार्वाक दर्शन,** प्रत्यक्ष को ही एक मात्र प्रमाण स्वीकार करता है– **प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्**। **बौद्ध दर्शन** मे प्रमाण दो हैं– प्रत्यक्ष और अनुमान।[3] **वैशेषिक दर्शन** भी इन्ही दो प्रमाणो को यथार्थ ज्ञान का साधन स्वीकार करता है। **जैन दर्शन** मे तीन प्रमाण स्वीकार किये गये है– प्रत्यक्ष, अनुमान, और शब्द– **प्रमाणानि प्रत्याक्षानुमानशब्दानि**[4]।

सांख्य एंव **योग दर्शन** भी इन्ही तीन प्रमाणों को स्वीकार करते हैं[5] जबकि **न्याय दर्शन** इन तीन के अलावा उपमान रुपी चौथा प्रमाण भी मानता है। नैयायिको के अनुसार प्रमाण चार हैं– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द– **प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि**[6]।

मीमांसा दर्शन में प्रभाकर मिश्र एंव उनके अनुयायि प्रमाणो की संख्या पाँच मानते है– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द और अर्थापत्ति जबकि कुमारिल भट्ट उपर्युक्त पाँच के अलावा छठे प्रमाण के रुप में अनुपलब्धि को भी स्वीकार करते हैं। इन्ही छः प्रमाणो को **वेदान्त दर्शन** भी स्वीकार करता है। **पुराण दर्शन** मे इन छः के अतिरिक्त दो प्रमाण सम्भव ओर ऐतिह्य को भी स्वीकार किया गया है। इस प्रकार भारतीय दर्शन में कुल आठ प्रमुख प्रमाण माने गये हैं– प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, सम्भव एवं ऐतिह्य। कही–कही इन आठ प्रमाणो के अतिरिक्त ,चेष्टा नामक नौवा प्रमाण भी माना गया है। इस मत का सर्मथक **तन्त्र दर्शन** है।

प्रत्यक्षः– प्रमा (यथार्थ ज्ञान) के सभी साधनो में प्रत्यक्ष निर्विवाद रुप से सर्वश्रेष्ट साधन (प्रमाण) है। इसे सभी भारतीय दर्शन स्वीकार करते हैं चाहे आस्तिक (षड्दर्शन) हो या नास्तिक (चार्वाक, बौद्ध, जैन दर्शन)। नास्तिक शिरोमणि चार्वाक तो प्रत्यक्ष को ही एक मात्र प्रमाण मानता है। इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रमाण को स्वीकार नही करता। यद्यपि सभी भारतीय दर्शन प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार करते है फिर भी उनकी दृष्टि मे प्रत्यक्ष के स्वरुप एंव उसकी व्याख्या को लेकर भिन्नता है।

प्रत्यक्ष शब्द प्रति+अक्ष से बना है। प्रति का अर्थ है सामने और अक्ष का अर्थ आँख अर्थात जो आँखो के सामने हो वह प्रत्यक्ष है। वैशेषिक सूत्र के भाष्यकार प्रशस्तपाद ने अक्ष का अर्थ आँख, कान, जिह्वा, नाक, त्वचा और मन, इन सभी छः इन्द्रियो को बताया है। अतः जो भी ज्ञान इन्द्रियों से प्राप्त होता है है वह प्रत्यक्ष है। इन्द्रियो का अपने विषयो से सन्निकर्ष होने पर जो ज्ञान होता है वह प्रत्यक्ष कहलाता है–**इन्द्रियार्थसन्निकर्ष जन्य ज्ञानम् प्रत्यक्षं।**

अन्य सभी प्रमाणो मे प्रत्यक्ष सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है क्योंकि अन्य प्रमाण भी अपनी सिद्धि के लिए प्रत्यक्ष पर ही निर्भर हैं जैसा कि योग दर्शन टीका मे वाचस्पति मिश्र ने कहा है– **तत्र सकल प्रमाणमूलत्वात् प्रथमतः प्रत्यक्षं लक्षयति**[7]**।** जबकि प्रत्यक्ष प्रमाण को किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नही पड़ती– **प्रत्यक्षं किम् प्रमाणम्।**

चार्वाक दर्शन मे प्रत्यक्ष को ही एक मात्र प्रमाण माना गया है– प्रत्यक्षमेय प्रमाणम्। केवल इन्द्रिय प्रत्यक्ष के द्वारा ही यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अन्य प्रमाण चार्वाक को अस्वीकार है।

बौद्ध दर्शन मे प्रत्यक्षः– बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष विषयक दो मत प्राप्त होते हैं–
योगाचार विज्ञानवादी वसुबन्धु का मत है कि प्रत्यक्ष **'ततार्थद् विज्ञानम्'** है। शून्यतावादी बौद्ध आचार्य दिग्नाग के अनुसार प्रत्यक्ष वह है जो कल्पना रहित होता है जिसमे वस्तु के नाम, जाति आदि की योजना नही होती–'प्रत्यक्षं **कल्पनापोढंनायजात्याद्य संयुक्तम्**[8]। बौद्ध आचार्य धर्म कीर्ति के अनुसार–कल्पना रहित अभ्रान्त ज्ञान प्रत्यक्ष है– **'तत्रकल्पनापोढ़ामभ्रान्तंप्रत्यक्षम्'**[9]

जैन दर्शन मे प्रत्यक्षः–जैन दर्शन में प्रत्यक्ष को असाक्षात ज्ञान के रुप में स्वीकार किया गया है। आचार्य कुन्द–कुन्द के अनुसार ज्ञान के दो प्रकार हैं–प्रत्यक्ष और परोक्ष। आचार्य उमा स्वामी ने पाँच प्रकार के ज्ञान बताये हैं–मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्याय और केवल ज्ञान–**मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलानि ज्ञानम्**[10]। तत्वार्थ सूत्र में मति और श्रुति को परोक्ष ज्ञान और अवधि, मनः पर्याय एवं केवल ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहा गया है। मन, इन्द्रिय इत्यादि से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे परोक्ष या अप्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं जबकि अपरोक्ष या प्रत्यक्ष ज्ञान सीधा आत्मा से प्राप्त (उत्पन्न) ज्ञान होता है, ऐसा जैन दर्शन का मत है।

न्याय–वैशेषिक दर्शन मे प्रत्यक्षः– वैशेषिक दर्शन के अनुसार इन्द्रियों का उनके विषयों से सन्निकर्ष होने पर उत्पन्न ज्ञान ही प्रत्यक्ष है। जैसा कि वात्सायन भाष्य मे कहा गया है–**तत्राक्षमक्षं प्रतीत्योत्पद्यते इति प्रत्यक्षम्।**[11]
चक्षु (आँख), नाक (घ्राण) कान (कर्ण), जीभ (रसना) और त्वचा (त्वक) इन पाँच ज्ञानेन्द्रियों के अलावा छठी ज्ञानेन्द्रि मन है –**अक्षाणीन्द्रियाणी घ्राणरसनचक्षुस्त्वकःश्रोतमनांसि षट्**। इन छः ज्ञानेन्द्रियों का विषयों के सन्निकर्ष से जो ज्ञान उत्पन्न
होता है वह प्रत्यक्ष कहलाता है।

न्याय दर्शन के प्रर्वतक महर्षि गौतम का मत भी यही है। न्याय सूत्र के अनुसार **इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नंज्ञानम् प्रत्यक्षम्**[12] अर्थात इन्द्रिय और अर्थ (विषय) के सन्निकर्ष से होने वाला (उत्पन्न) ज्ञान प्रत्यक्ष है–**इन्द्रियस्यार्थेन सन्निकर्षात् उत्पद्यते यत ज्ञानम् तत् प्रत्यक्षम्**[13] ।
प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए आत्मा का मन से, मन का इन्द्रिय से और इन्द्रिया का विषय से सन्निकर्ष आवश्यक है–**आत्मा मनसा संयुज्यते, मनः इन्द्रियेण इन्द्रियमर्थे**[14]।

महर्षि गौतम के अनुसार प्रत्यक्ष के तीन लक्षण हैं– अव्यपदेश होना, अव्याभिचार होना और व्यवसायात्मक होना–**ज्ञानमव्यपदेशमव्यभिचारव्यावसात्मकम प्रत्यक्षम्**[15]
कुछ विद्वानो के अनुसार उपर्युक्त अव्यपदेश शब्द निर्विकल्पक प्रत्यक्ष तथा व्यवसायात्मक शब्द सविकल्पक प्रत्यक्ष के समान हैं।

नव्य न्याय दर्शन, वेदान्त दर्शन एवं मीमांसा दर्शन में प्रभाकर मिश्र जैसे दार्शनिक प्रत्यक्ष को साक्षात् ज्ञान के रुप मे ही परिभाषित करते हैं। नव्य न्याय के प्रर्वतक गंगेश उपाध्याय अपने ग्रन्थ तत्त्वचिंतामणि मे कहते हैं कि–**'प्रत्यक्षस्व साक्षात्कारित्वम् लक्षणम्'**[16] अर्थात विषय की साक्षात् प्रतीति ही प्रत्यक्ष का लक्षण है।

वेदान्त दर्शन के अनुसार जो ज्ञान बिना किसी करण अथवा माध्यम के हो उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। नव्य वेदान्ती भी प्रत्यक्ष के लिए इन्द्रियों की आवश्यकता अनिवार्य नही मानते। अन्तः प्रत्यक्ष तो बिना इन्द्रिय के ही होता है फिर भी वह प्रत्यक्ष ही है। ईश्वर को भी बिना इन्द्रिय के ही प्रत्यक्ष होता है।[17]

मिश्र मीमांसा भी प्रत्यक्ष को साक्षात् ज्ञान के रुप मे ही मानते हैं– **साक्षात प्रतीतिः प्रत्यक्षम्।**[18]
फिर भी इन्द्रियॉ अपरिहार्य हैं। प्रभाकर मिश्र 'त्रिपुटी प्रत्यक्ष वादी' हैं। उनके अनुसार प्रत्यक्ष के तीन तत्त्व–मेय, मातृ तथा मान हैं जिनकी प्रकाशना प्रत्यक्ष मे होती है– **मेयमातृप्रमासु सा**[19]

प्रत्यक्ष की विषयवस्तु ही 'मेय' है। प्रत्यक्षकर्ता 'मातृ' तथा प्रमा को ही 'मान' कहते हैं। मान ही 'मेय' तथा मातृ का प्रकाशित करता है। केशव मिश्र के अनुसार साक्षात्कारी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष कहते हैं– **'साक्षात्कारि प्रमाकरणं प्रत्यक्षम्'**[20]**।** साक्षात्कारी प्रमा इन्द्रिय जन्य है–
'साक्षात्कारिणी च प्रमा सैवोच्यते या इन्द्रियज'।[21]

गंगेश उपाध्याय के अनुसार प्रत्यक्ष मे इन्द्रियॉ की उपस्थिति हो सकती है और नही भी। यानी कि इन्द्रियों की उपस्थिति आकस्मिक है, अनिवार्य नहीं।[22]

इस प्रकार जो ज्ञान किसी अन्य ज्ञान को माध्यम लिए बिना प्राप्त हो या जो ज्ञान अन्य प्रमाणों पर आश्रित न हो– वह प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष तथा अन्य प्रमाणों के बीच सबसे बड़ा अन्तर यही है कि प्रत्यक्ष किसी अन्य प्रमाण पर आश्रित नहीं हैं जबकि अन्य प्रमाण किसी न किसी रुप में प्रत्यक्ष पर आश्रित हैं। अन्य प्रमाणों की परीक्षा का अंतिम आधार प्रत्यक्ष ही है जबकि प्रत्यक्ष की पुष्टि किसी अन्य प्रमाण से न होकर अन्ततः प्रत्यक्ष से ही होती है। इसीलिए प्रत्यक्ष को सभी प्रमाणो का आधार कहते हुए इसे सर्वमान्य ज्ञान का साधन माना गया है। यद्यपि इसके स्वरुप भेद उपभेद आदि विषयों को लेकर भारतीय दार्शनिकों में मतभेद है और इस मतैक्य अभाव के कारण इसकी विस्तृत विवेचना भी भारतीय दर्शन में की गई है।

सहायक सन्दर्भ सूचीः–

1. न्यायकुसुमाजलि–3/1
2. न्यायवार्तिक 1/1/1
3. प्रमाणवार्तिक 2/1
4. न्यायावतारवृत्ति
5. सांख्यकारिका–4
6. न्यायसूत्र–1/1/3
7. वाचस्पति मिश्र–योग टीका 16
8. प्रमाण समुच्चय 1/3
9. न्याय बिन्दु, प्रथम परिच्छेद
10. तत्वार्थ सूत्र 9
11. वात्स्यायन भाष्य
12. न्यायसूत्र 1/1/4
13. वात्स्यायन भाष्य 1/1/4
14. वही
15. न्यायसूत्र 1/1/4
16. तत्त्वचिंतामणि पेज 552
17. डा0 नीलिमा सिन्हा भारतीय ज्ञानमीमांसा पेज 59 मोतीलाल वनारसीदास दिल्ली
18. प्रकरण पंजिका
19. वही
20. तर्कभाषा पृष्ठ–60
21. वही
22. डा0 नीलिमा सिन्हा भारतीय ज्ञानमीमांसा पृष्ठ–66